हिन्दी

अध्याय-20: विप्लव गायन

SHIVOM CLASSES 8696608541

-बालकृष्ण शर्मा नवीन

सारांश

प्रस्तुत कविता जड़ता के विरुद्ध विकास एवं गतिशीलता की कविता है।
यह कविता एक क्रांति गीत है जिसके द्वारा कवि जीवन में परिवर्तन लाना चाहते हैं।
कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन ने अपनी इस कविता में लोगों से सामाजिक बुराईयों और पाखंडों की ज़ंजीरें तोड़कर प्रगति के मार्ग पर बढ़ने का आह्वान किया है। कवि कहते हैं कि अब तुम शांति के गीत गाना छोड़ो और क्रांति की तान सुनाओ ताकि बुराईयों और बुरे लोगों में हलचल मच जाए। कवि ने इस कविता के जरिए समाज को एक महान बदलाव लाने का संदेश दिया है।
कवि मानते हैं कि पुराने कुविचारों और पाखंडों का अंत करके ही हम एक नए और स्वच्छ समाज की नींव रख पाएँगे। इसीलिए कवि ने विप्लव गायन कविता में हम सभी से एक क्रांति लाने का अनुरोध किया है, ताकि एक बेहतर समाज बनाया जा सके।

भावार्थ

कवि, कुछ ऐसी तान सुनाओ,
जिससे उथल-पुथल मच जाए,
एक हिलोर इधर से आए,
एक हिलोर उधर से आए।
सावधान! मेरी वीणा में,
चिनगारियाँ आन बैठी हैं,
टूटी हैं मिजराबें, अंगुलियाँ
दोनों मेरी ऐंठी हैं।

भावार्थ- विप्लव गायन कविता की इन पंक्तियों में कवि एक ऐसा गीत गाने की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं, जो समाज में क्रांति पैदा करे और जिससे परिवर्तन की शुरुआत हो।
अगली पंक्तियों में कवि लोगों को सावधान करते हुए कहते हैं कि मेरा यह गीत समाज में क्रांति की चिंगारियाँ पैदा कर सकता है, आपकी शांति भंग हो सकती है और इस क्रांति से आने वाले बदलाव आपको कष्ट दे सकते हैं। वो कहते हैं कि उनके इस गीत से समाज में कई बदलाव आएँगे और वर्तमान व्यवस्था उलट-पुलट हो सकती है।

कंठ रुका है महानाश का
मारक गीत रुद्ध होता है,

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

आग लगेगी क्षण में, हृत्तल
में अब क्षुब्ध युद्ध होता है।
झाड़ और झंखाड़ दग्ध हैं -
इस ज्वलंत गायन के स्वर से
रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है
निकली मेरे अंतरतर से।

भावार्थ- कवि ने विप्लव गायन कविता की इन पंक्तियों में कहा है कि मेरे गीत से पैदा हुए हालातों की वजह से महाविनाश का गला रुंध गया है और उसने मृत्यु का गीत गाना रोक दिया है। असल में, इन पंक्तियों में कवि कहना चाह रहे हैं कि जब भी समाज में बदलाव के लिए आवाज़ उठाई जाती है, तो उसे दबाने की लाखों कोशिशें की जाती हैं। मगर, क्रांति की आवाज़ ज्यादा समय तक दबाई नहीं जा सकती।

कवि के दिल में सामाजिक बुराइयों और वर्तमान व्यवस्था के प्रति को रोष है, उसकी ज्वाला से हर अवरोध जल कर राख हो जाएगा। फिर बदलाव के गीतों की तान दोबारा दोगुने ज़ोर से शुरू हो जाती है और उसके वेग से सभी सामाजिक कुरीतियां और ढोंग-पाखंड पल भर में समाप्त हो जाते हैं।

कण-कण में है व्याप्त वही स्वर
रोम-रोम गाता है वह ध्वनि,
वही तान गाती रहती है,
कालकूट फणि की चिंतामणि।
आज देख आया हूँ - जीवन
के सब राज़ समझ आया हूँ,
भ्रू-विलास में महानाश के
पोषक सूत्र परख आया हूँ।

भावार्थ- विप्लव गायन कविता की इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि संसार के हर एक कण में क्रांति का गीत समा गया है, हर दिशा से उसी की प्रतिध्वनि आ रही है। जिस तरह शेषनाग अपनी मणि की चिंता में डूबे रहते हैं, उसी प्रकार यह सारा संसार भी नवनिर्माण के चिंतन में लीन हो गया है।

विप्लव गायन कविता की अगली पंक्तियों में कवि कहते हैं कि मैं तो यह जानता हूँ कि बदलाव के बाद समाज में कैसी परिस्थितियाँ पैदा होंगी। इसीलिए वो कहते हैं कि समाज के

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

विचारों और नज़रिए में बदलाव आने के साथ ही बुराइयों से भरे दूषित समाज का विनाश होने लगेगा और इसके बाद ही एक नए राष्ट्र और समाज का निर्माण प्रारम्भ होगा।

SHIVOM CLASSES
8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

NCERT SOLUTIONS

कविता से प्रश्न (पृष्ठ संख्या 142)

प्रश्न 1 'कण-कण में है व्याप्त वही स्वर... कालकूट फणि की चिंतामणि।'

a. 'वही स्वर', 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' आदि वाक्यांश किसके लिए किस भाव के लिए प्रयुक्त हुए हैं?
b. वही स्वर, वह ध्वनि एवं वही तान से संबंधित भाव का 'रुद्ध-गीत की क्रुद्ध तान है। निकली मेरी अंतरतर से'-'पंक्तियों से क्या कोई संबंध बनता है?

उत्तर-

a. 'वही स्वर', 'वह ध्वनि' एवं 'वही तान' नव निर्माण हेतु जनता को जागृत करने के चिंतन के लिए प्रयुक्त हुए हैं। ये क्रांति की उस भावना के लिए प्रयोग किए गए हैं, जो हर ओर व्याप्त है।
b. हाँ, 'वही स्वर, वह ध्वनि एवं वही तान' में जो भाव है उसका 'रुद्ध गीत की क्रुद्ध तान है। निकली मेरे अंतरतर से' संबंध बनता है। कवि के हृदय वर्तमान व्यवस्था के प्रति जो क्रोध है, वही क्रांति गीत के रूप में निकल रहा है। यही क्रांति गीत फिर कण-कण में व्याप्त होकर प्रतिध्वनित होने लगता हैं।

प्रश्न 2 नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

'सावधान! मेरी वीणा में ..... दोनों मेरी ऐंठीं हैं।

उत्तर- कवि जब वीणा से क्रांति के स्वर निकालने का प्रयास करते हैं तो वीणा से चिंगारियाँ उत्पन्न होने लगती हैं, मिज़राबें टूट जाती हैं और कवि की अंगुलियाँ ऐंठ जाती हैं। इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि क्रांति की शुरूआत करने वाले हर व्यक्ति या समाज को दमन के कठोर प्रयासों का सामना भी करना पड़ता है, जिसमें प्राणों की बाजी तक लगानी पड़ सकती है।

कविता से आगे प्रश्न (पृष्ठ संख्या 142-143)

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

प्रश्न 1 स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अनेक कवियों ने स्वाधीनता को मुखर करनेवाली ओजपूर्ण कविताएँ लिखीं। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की ऐसी कविताओं की चार-चार पंक्तियाँ इकट्ठा कीजिए जिनमें स्वाधीनता के भाव ओज से मुखर हुए हैं।

उत्तर-

a.

द्वार बलि का खोल, चल, भूडोल कर दें,

एक हिमगिरि, एक सिर का मोल कर दें,

मसल कर, अपने इरादों-सी उठाकर,

दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें। -माखन लाल चतुर्वेदी

b.

इस नींद में ही तो यवन आकर यहाँ आहत हुए,

जागे न हो! स्वातंत्र्य खोकर अन्त में तुम धृत हुए।

इस नींद में ही सब तुम्हारे पूर्व गौरव हत हुए,

अब और कब तक इस तरह सोते रहोगे मृत हुए। -मैथिलीशरण गुप्त

c.

योग्य जन जीता है।

पश्चिम की उक्ति नहीं-

गीता है, गीता है-

स्मरण करो बार-बार-

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

जागो फिर एक बार। -सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला'

अनुमान और कल्पना प्रश्न (पृष्ठ संख्या 143)

प्रश्न 1 कविता के मूलभाव को ध्यान में रखते हुए बताइए कि इसका शीर्षक 'विप्लव-गायन' क्यों रखा गया होगा?

उत्तर- कविता का मूल भाव है जड़ता, अंधविश्वास, रूढ़ियों, कुरीतियों तथा कुप्रथाओं के बंधन से मानवजाति को आजादी दिलाना तथा नए समाज का निर्माण करना। कवि क्रांति के माध्यम से यह परिवर्तन लाना चाहता है, इसीलिए उसने क्रांति का आह्वान करती हुई अपनी कविता का नाम रखा है 'विप्लव-गायन'।

भाषा की बात प्रश्न (पृष्ठ संख्या 143)

प्रश्न 1 कविता में दो शब्दों के मध्य (-) का प्रयोग किया गया है, जैसे- 'जिससे उथल-पुथल मच जाए' एवं 'कण-कण में है। व्याप्त वही स्वर'। इन पंक्तियों को पढ़िए और अनुमान लगाइए कि कवि ऐसा प्रयोग क्यों करते हैं?

उत्तर- कुछ शब्द युग्म सदैव साथ प्रयुक्त होते हैं, तथा उन्हें जोड़ने के लिए (-) चिह्न का प्रयोग किया जाता है। कविता में (-) चिह्न का प्रयोग कवि ने अपने शब्दों को प्रभावी बनाने के लिए किया है।

प्रश्न 2 कविता में (, - आदि) विराम चिह्नों का उपयोग रूकने, आगे-बढ़ने अथवा किसी खास भाव को अभिव्यक्त करने के लिए किया जाता है। कविता पढ़ने में इन विराम चिह्नों का प्रभावी प्रयोग करते हुए काव्य पाठ कीजिए। गद्य में आमतौर पर है शब्द का प्रयोग वाक्य के अंत में किया जाता है, जैसे- देशराज जाता है। अब कविता की निम्न पंक्तियों को देखिए 'कण-कण में है व्याप्त... वही तान गाती रहती है। इन पंक्तियों में 'है' शब्द का प्रयोग अलग-अलग जगहों पर किया गया है। कविता में अगर आपको ऐसे अन्य प्रयोग मिलें तो उन्हें छाँटकर लिखिए।

उत्तर- टूटी हैं मिजराबें, अंगुलियाँ दोनों मेरी ऐंठी हैं।

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)

कंठ रुका है महानाश का मारक गीत रुद्ध होता है।

प्रश्न 3 निम्न पंक्तियों को ध्यान से देखिए'-

'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ... एक हिलोर उधर से आए'

इन पंक्तियों के अंत में आए, जाए जैसे तुक मिलाने वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसे तुकबंदी या अंत्यानुप्रास कहते हैं। कविता से तुकबंदी के अन्य शब्दों को छाँटकर लिखिए। छाँटे गए शब्दों से अपनी कविता बनाने की कोशिश कीजिए।

उत्तर-

- बैठी/ ऐंठी
- ध्वनि/ चिंतामणि
- इधर/ उधर
- रुद्ध/ युद्ध

SHIVOM CLASSES 8696608541

SHIVOM CLASSES - WhatsApp for Notes (8696608541)